CRUSADES (Part-2)

धर्म युद्ध

धर्म युद्धों के कारण

2. 11 वीं सदी में चर्च द्वारा प्रतिपादित ईश्वरीय शांति के सिद्धांत का भी धर्म युद्ध से महत्वपूर्ण संबंध था ।सामंतों के परस्पर झगड़ों से यूरोप में सदैव अशांति बनी रहती थी। हफ्ते में 4 दिन और साल में 6 महीने की 'ईश्वरीय शांति' बनाए रखने के चर्च के आदेश से भी जब शांति स्थापना में विशेष सहायता नहीं मिली तो चर्च नें सामंती युद्ध प्रियता का इस्लाम के विरुद्ध धर्म युद्ध के रूप में उपयोग करने का प्रयास किया।

3. प्रत्येक ईसाई फिलिस्तीन को संपूर्ण ईसाई जगत का सम्मिलित '**फीफ**' समझता था ।इसका अर्थ वह भूमि से है जिस पर व्यक्ति रहता हो, जिसमें भरण पोषण होता हो और जिसमें कुछ विशिष्ट अधिकार हो। यही कारण है कि मुसलमानों के व्यवहार के कारण जब ईसाई तीर्थ यात्रियों को फिलीस्तीन जाना कठिन हो गया तब पोप ने सर्वोच्च आध्यात्मिक सत्ता के रूप में

Scanned with CamScanner

संपूर्ण ईसाई जगत से फिलीस्तीन के फीफ को जीतने का आह्वान किया।

4. बहुत से लोग धर्म युद्ध में केवल स्थान परिवर्तन, जिज्ञासा और साहसिकता की दृष्टि से शामिल हुए थे ।राजा गण, नाइट और शासक वर्ग के लोग पूर्व में मुसलमानों से संपत्ति और जागीर छिनने के उद्देश्य से, कम्मी यूरोप में अपनी दुखदाई जिंदगी से छुट्टी पाने, कर्ज में डूबे व्यक्ति तथा अन्य प्रकार के अभियुक्त कानून तथा न्याय के शिकंजे से मुक्त होने के लिए धर्म योद्धा बने।

5. प्रसिद्ध इतिहासकार ***विला डंयूरा*** ने व्यवसायिक उन्नति की भावना को धर्म युद्द का एक प्रधान कारण माना। उन्होंने लिखा है कि इटली के पिसा, जेनेवा, वेनिस ,एमेफी आदि नगरों ने अपनी उन्नतशील व्यापार और तथा व्यापारिक शक्ति को और भी अधिक उन्नतशील तथा शक्तिशाली करने का प्रयास किया। उन्होंने पूर्वी भूमध्य सागर में मुसलमानों के उत्कर्ष को समाप्त करने तथा निकट पूर्व में अपना बाजार खोलने की योजना बनाना प्रारंभ किया।

6. परिस्थिति की अनुकूलता ने भी धर्म युद्धों के लिए माहौल तैयार किया। हंगरी निवासियों के ईसाई धर्म में दीक्षित किए

Scanned with CamScanner

जाने के फलस्वरूप पूर्व की ओर पहुंचने का स्थल मार्ग खुल गया ।इतालवी नगरों की सामुद्रिक विकास और सिसली से मुसलमानों के निष्कासन के फलस्वरूप पूर्व की ओर जाने का वह सामुद्रिक मार्ग जो अब तक मुसलमानों के नियंत्रण में था, धर्म योद्धाओं के लिए खुल गया।

घटनाक्रम का विकास

धर्म युद्धों के प्रारंभ में **पीटर द हरमिट** के उपदेशों तथा **पिया सेंजा** एवं **क्लेरमौंट** की धर्म सभाओं का सीधा प्रभाव पड़ा। पीटर फ्रांस का निवासी था। जेरूसलम यात्रा के क्रम में वहां के धर्म अध्यक्ष ने यूरोप के ईसाइयों के नाम उसे पत्र दिए जिसे लेकर वह रोम पहुंचा तथा **पोप अर्बन द्वितीय** से धर्मयुद्ध की तैयारी की अनुमति चाही। वह जगह-जगह लोगों को प्रथम धर्म युद्ध में शामिल होने हेतु प्रेरित करने लगा। इसी बीच सेल्जुक तुर्कों के लगातार बढ़ने के फलस्वरूप सम्राट **अलेक्सयस कॉमनुस** ने पोप से सहायता की याचना की।पोप ने **1095 ईसवी** में इस पर विचार करने हेतु या **पियासेंजा** में एक धर्म सभा बुलाई किंतु मतभेदों के कारण ठोस निर्णय नहीं हो पाया। पोप ने इसी वर्ष फ्रांस स्थित **क्लेरमौंट** में दूसरी सभा का आयोजन किया जिसमें 14 आर्कविशप, सवा दो सौ विशप ,चार सौ भिक्षु तथा अन्य

Scanned with CamScanner

अनगिनत लोग शामिल हुए। पोप ने **27 नवंबर 1095** ई. को लोगों से -**ईसा अपनी रक्षा के लिए आपका आह्वान कर रहे हैं**- जैसे भावनात्मक अपील की। लोग एक साथ -**यह ईश्वर की इच्छा है** जैसे नारों से प्रत्युत्तर दिया। 28 नवंबर को विशपों ने प्रस्तावित अभियान की रूपरेखा रखी। यह तय हुआ कि लोग रंगीन कपड़े का क्रॉस अपने कोट पर लगाएंगे और इसी से उन्हें ***क्रसेसिगनेटी*** अर्थात ***क्रुसेडर्स*** कहा जायेगा। जब तक नाइट धर्म युद्ध में व्यस्त रहेंगे विशप उनकी संपत्ति की रक्षा करेंगे ।यदि जेरूसलम तक पहुंच जाएंगे या इस प्रयास में मारे जाएंगे तो भी उनके सभी अपराध माफ कर दिए जाएंगे ।यदि धर्म युद्ध से मुंह मोड़ लेंगे तो उन्हें जाति-बहिष्कृत माना जायेगा। धर्म योद्धाओं को **15 अगस्त 1096 ई.** को **कांस्टेण्टीपुल** में जमा होकर अभियान पर निकल जाना था।

विभिन्न धर्म युद्ध:

1. पहला धर्म युद्ध- 1096ई.-1099ई.
2. दूसरा धर्म युद्ध- 1147ई.-1149ई.
3. तीसरा धर्म युद्ध- 1189 ई.-1192ई.

Scanned with CamScanner

4. चतुर्थ धर्म युद्ध- 1202ई.-1204 ई.
5. पंचम धर्म युद्ध- 1216ई.1220ई.
6. छठा धर्म युद्ध
7. सप्तम धर्म युद्ध- 1249ई.-1254ई.
8. अष्टम् धर्म युद्ध -1270ई.-1272ई
9. बच्चों का धर्म युद्ध- 1212ई.(फ्रांस के स्टीफन के नेतृत्व में)

To be continued....

BY: ARUN KUMAR RAI
Asst.Professor
P.G. Dept. Of History
Maharaja College,Ara.

Scanned with CamScanner